International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2014, Vol. No. 4, Issue No. III, Jul-Sep **ISSN: 2249-4642**

अरुण रामायण और वाल्मीकि रामायण के भावव्यंजना-पद्धतिगत सौन्दर्य का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

COMPARATIVE STUDY OF IDIOMATIC-METHODICAL BEAUTY OF ARUN RAMAYANA AND VALMIKI RAMAYANA

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

IJRSSH

ABSTRACT

In Ram-Kavya, there is devotion of Dasya Bhav which comes under legitimate devotion. There is a lot of emphasis on dignity. In Ram-Kavya, full faith has been expressed on Varnashram Dharma, rituals and Vedas-Maryada etc. Ramanuja is a supporter and promoter of specific dualism, according to which the soul is a part of Brahma, therefore, along with Brahma, the soul is also true. This is the reason why Tulsi salutes the Siyarammay world. In Ram-Kavya, Brahma is shown following the dignity of the living being. Ram being Narayan is still male and being male he is Narayan. Other characters in the Rama-kavya are Vibhishana, Angada, Hanuman, Lakshmana, Bharata and Janaki who are depicted as devotees of Rama's servitude in some form or the other. In the devotion of servant-servant spirit, which is very beneficial from the point of view of public collection, encroachment of even a mole of dignity is prohibited. This is the reason why Ram-Kavya is relatively more moderate and balanced in every field. Undoubtedly, the basic purpose of this poem is the expression of devotion, but it is not devotion in an exclusive form. Along with personal spiritual practice, the bright shade of folk religion is also present in it. In Ram-Kavya, there is a living ambush-reaction of the contemporary social, religious and political conditions. In Tulsi literature, there are signs related to it here and there. The biggest feature of the characters of Tulsi poetry is that despite being supernatural, they look like us, who give us inspiration and enthusiasm in every difficult situation of life.

सारांश

राम-काव्य में दास्य भाव की भक्ति है जो वैधी भक्ति के अन्तर्गत आती है। इसमें मर्यादा पर अत्यधिक बल दिया गया है। राम-काव्य में वर्णाश्रम धर्म, कर्मकांड और वेद-मर्यादा आदि पर पूर्ण आस्था प्रकट की गयी है। रामानुज विशिष्ट द्वैतवाद के समर्थक एवं प्रवर्तक हैं जिसके अनुसार जीव ब्रह्म का अंश है अतः ब्रह्म के साथ-साथ जीव भी सत्य है। यही कारण है कि तुलसी सियाराममय जगत को कर जोरि प्रणाम करते हैं। राम-काव्य में ब्रह्म को जीव मर्यादा का पालन करते हुए दिखाया गया है। राम नारायण होते हुए भी नर हैं और नर होते हुए नारायण हैं। राम-काव्य के अन्य पात्र विभीषण, अंगद, हनुमान, लक्ष्मण, भरत और जानकी किसी न किसी रूप में राम के दास्य भाव के भक्त चित्रित किए गए हैं। सेव्य-सेवक भाव की भक्ति में, जो कि लोक संग्रह की दृष्टि से अत्यंत हितकर है मर्यादा का तिल भर भी अतिक्रमण वर्जित है। यही कारण है कि राम-काव्य प्रत्येक क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक संयत और सन्तुलित है। निःसन्देह इस काव्य का मूल उद्देश्य भक्ति की अभिव्यक्ति है, पर वह ऐकान्तिक रूप में भक्ति नहीं है। उसमें व्यक्तिगत साधना के साथ-साथ लोक-धर्म की उज्ज्वल छटा भी वर्तमान है। राम-काव्य में तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का सजीव घात-प्रतिघात है। तुलसी साहित्य में इससे सम्बद्ध यत्र तत्र संकेत हैं। तुलसी काव्य के पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अलौकिक होते हुए भी हम जैसे लगते हैं, जो जीवन की प्रत्येक विकट परिस्थितियों में हमें प्रेरणा तथा स्फूर्ति देते हैं।

परिचय

कवि साक्षात्कृत सौन्दर्य का चित्रण / संप्रेषण काव्य के माध्यम से सहृदय तक करता है । अतएव कृति की सफलता सम्प्रेषण क्षमता पर निर्भर होती है, फिर चाहें यह संप्रेषणीयता भावों की हो या फिर भाषागत हो । यहाँ भाव-व्यंजना-पद्धति में सहायक शैलीगत सौन्दर्य का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है। वाल्मीकि ने अपने पात्रों के भावों का चित्रण उक्तियों के माध्यम सें अधिक किया है । आंगिक- चेष्टाओं का उपयोग अपेक्षाकृत कम हुआ है । रामायण आदि काव्य का है । अतः भाव-व्यंजना पद्धतियों का विकास कम रूपों में हुआ है। आलोच्य काव्यों में भाव व्यंजन-पद्धतिगत सौन्दर्य का चित्रण संक्षिप्त रूप में किया जा रहा है-

(१) उक्तियों के माध्यम से भाव- सौन्दर्य व्यंजना-

वाल्मीकि ने भावों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों के लिए उक्तियों का आश्रय अधिक लिया है। इस शैली का प्रभाव परवर्ती कवियों में भी दिखाई देता है । उक्ति विस्तार के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

भव मैथिलि भार्या में मोहमेतं विसर्जय ।

लोकेभ्यो यानि रत्नानि सम्प्रमथ्या हृतानि मे ।

तानि ते भीरू सर्वाणि राज्यं चैव ददामि ते ।

IJRSSH

विजित्य पृथिवीं सर्वा नाना नगरमालिनीम् ।

जनकाय प्रदास्यामि तव हेतोर्विलासिनि ।।'

रावण सीता के समक्ष प्रणय निवेदन करता है, जिसमें लोभ, प्रेम, काम अपनी वीरता इत्यादि भावों चित्रण विभिन्न उक्तियों में हैं । परशुराम की उक्तियों में वीरता दशरथ की उक्तियों में वीरता, दानशीलता किन्तु प्रच्छन्न कामुकता दिखाई देती है । परशुराम का वक्तत्व दृष्टव्य है-

मैं अग्नि पुरुषा शोषण को स्वयं मिटाऊँगा ।
नृप-अनाचार को मैं समाप्त कर पाऊँगा ।
मैं बना रहा हूँ मानवता का धर्म सेतु ।
भू से कुरीतियाँ मिटे यही मैं चाह रण ।'

आंगिक चेष्टाओं से भाव-व्यंजना-

वाल्मीकि ने पात्रों की उक्तियों के माध्यम से भाव-व्यंजना अधिकांश रूप में की हैं तथापि आंगिक चेष्टाओं से भी भावों की सघनता व्यंजित हैं-

अभिषेकों यदा सज्जः किमिदानीमिदं तव ।
अपूर्वी मुख वर्णश्च न प्रहर्षश्च लक्ष्यते ।।

निर्वासन की बात सुनकर राम की भावात्मक प्रतिक्रिया मुख- चेष्टा से व्यक्त होने का वर्णन उक्त श्लोक में हुआ है । पिता दशरथ की मृत्यु के समय भरत का शोक द्रष्टव्य है-

वाष्पमुत्सृज्य कठेन स्वात्मना परिपीडितः ।
प्रच्छाद्य वदनं श्रीमद् वस्त्रेण जयतां वरः ।

सीता वियोग में राम का प्रेम इस प्रकार व्यक्त हुआ है-

सविहलित सर्वांगो गतबुद्धिर्वि चेतनः ।
निषसादातुरो दीनो निःश्वस्याशीतमायतम् ।।

अशोक वाटिका में बैठी सीता के आंगिक मनोभावों का चित्रण देखिए-

वाष्पाम्बु परिपूर्णन कृष्ण वक्राक्षिष्क्ष्मणा ।
बदने ना प्रसन्नेन निःश्वसन्नी पुनः पुनः ।।
मलपंकधरां दीनां मण्डनाहमर्माण्डताम ।।

अरुण रामायणकार ने भी आंगिक चेष्टाओं से पात्रस्थ भावों की व्यंजना कुशलतापूर्वक की है। धनुषभंग के समय मदालस रावण का दर्प अहंकार, लोभ, विजय के प्रति आश्वस्ति इन क्रियाओं से व्यंजित है-

मूँछ पर हाथ देता वह आया वेदी पर

IJRSSH

देख कर उर्फ मुद्रा उसकी मृग दूग को डर ।
उसकी ललियाई आँखों में अब शक्ति अहम् ।
साँसों को फुला-फुला कर दैहिक बल संचय
जय के पहले ही ओटों पर उच्चरित विजय ।।

शूर्पणखा के काम भाव को आंगिक चेष्टाओं से इस प्रकार व्यक्त किया गया है-

अपने नख-शिख की देह छटा छिटकाती-सी
लंबी लंबी उसकी दों चितवन चंचल
हैं उड़ा रहा चंचल झकोर उसका अंचल ।
नूपुर झंकृ हो जाता चरण उठाने से ।
खिल उठते कांति कुसुम मृदु बाँह हिलाने ।।'

विरोधाभासी /अपूर्ण आगिक क्रियाओं से तत्परता

दर्शन की लालसा का भाव देखिए-

नयनों के बदले गालों में काजल कारी ।
बिंदी ललाट पर नहीं कपोलों पर सत्वर ।
एक ही कान में झुमका रत्नहार सिर पर ।
एक ही हाथ में बाजू नूपुर सोभित ।।

अप्रस्तुत विधान के माध्यम से भाव-व्यंजना-

अप्रस्तुत विधान के माध्यम से भावों की व्यंजना करना कुशल कवि का ही काम है--

लतामिव विनिष्कृत्तां पतितां देवतामिव ।
किन्नरीमिव निर्धूतां च्युतामप्सरसं यथा ।
मायामिव परिभ्रष्टां हरिणीमिव संयताम ।।
करेणुमिव दिग्धेन विद्धां मृगयुना बने ।
महाराज इवारण्ये स्नेहात परमदुःखिताम् ।।
संसक्तां धूमजालेन शिखमिव विभावसोः ।
तां स्मृतीमिव संदिग्धामृद्धिं निपतितामिव ।
विहतामिव च श्रद्धामाशां प्रतिहतामिव ।
सोपसगा यथा सिद्धिं बुद्धिं सकलुषामिव ।
अभूतेनापवादेन कीर्ति नियतितामिव ।'

IJRSSH

विहतामिव च श्रद्धामाशां प्रतिहतामिव ।
सोपसर्गा यथा सिद्धिं बुद्धिं सकलषामिव ।
अभूतेनापवादेन कीर्ति निपतितामिव ।

शैली - स्वरूप-

जिस प्रकार सांसारिकों के हाव-भाव वक्तृत्व कला अलग-अलग होती है। तदनुरूप उनका व्यक्तित्व अलग-अलग दिखाई पड़ता है, उसी प्रकार कवियों / साहित्यकारों द्वारा अलग प्रयुक्त शब्दों से उनका व्यक्तित्व परिलक्षित होता है वाल्मीकि ऋषि थे एवं रामावतार पोदार गृहस्थ थे। अतः उनके द्वारा प्रयुक्त शैलियों के उदाहरण निम्नवत् हैं-

विवरणात्मक शैली-

इसे अभिधा प्रधान/वर्णनात्मक वर्णनात्मक शैली भी कहा जाता है । महाकाव्यों में कथा को सामान्य गति देने के लिए कवि प्रायः इस शैली का उपयोग करता हैं इस शैली में सरल वाक्य, अभिधा प्रधान शब्द होते हैं । इससे किसी घटना का अप्रत्यक्ष वर्णन, अनेक वस्तुओं के रूप, आकारगत चित्रण किये जाते हैं । यहाँ काव्यात्मकता का अपेक्षा कम होती है । वाल्मीकि रामायण में नारद प्रोक्त रामकथा, प्रासंगिक कथाएँ, नगर, पर्वत, आश्रम, ऋषियों की तपस्या आदि का चित्रण इसी शैली में हुआ है । कुछ उदाहरण दृष्टव्य है -

(9) इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नाम जनैः : श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो वयुतिमान घृतिमान वर्शा ।
बुद्धिमान् नीतिमान वाग्मी श्रीमछत्रु निर्वहणः ।
बिपुलांसो महाबाहुः कम्बु ग्रीवो महाहनुः ।।'
(२) कोश संग्रहणो युक्ता बलस्य च परिग्रहे ।
अहितं चापि पुरुषं न हिंस्युरविदूषकम् ॥
वीराश्च नियतोत्साहा राज शास्त्रमनुष्ठिता
शुचीनां रक्षितारश्च नित्यं विषयासिनाम् ।।
(3) कोश संग्रहणी युक्ता बलस्य च परिग्रहे ।
अहितं चापि पुरुषं न हिंस्युरविदूषकम् ।।
चापि पुरुषं न हिंस्युरविदूषकम् ।।
वीराश्च नियतोत्साहा राजशास्त्रमनुष्ठिता
शुचीनां रक्षितारश्च नित्यं विषासिनाम् ।।
तस्याः शरीर विवरं प्रतिवेश पुरंदरः ।
गर्भ च सप्तधा राम चिच्छेद परमात्मवान् ।।

IJRSSH

भिद्यमानस्ततो गर्भो वज्रेण शत पर्वणा ।
रुरोड़ सुस्वरं राम ततो दितिरवुध्यत । । '

इसी प्रकार अरुण रामायण में भी नीति, उपदेश, वस्तु वर्णन इसी शैली में मिलते हैं-

(9) दिखलाई पड़े मार्ग में विविध दृश्य सुन्दर
आते आते आ गए अधिक वें दूर-दूर
सहसा गरजी ताड़का महाराक्षसी क्रूर
मुनि आज्ञा से राम ने उसे मारा शर-से
हो गया अलग क्षण में ही उसका सिर धड़ से ।।
हे राम कलिं कला कौशल में भी प्रसिद्ध
उसकी विशाल सेना गज-बल में भी प्रसिद्ध ।
उसके दक्षिणी छोर पर गोदावरी नदी
उसके नीचे राक्षसगण की प्रभुता बिखरी ।
(३) गांधार मद्र केकय कंबोज बंग उत्कल ।
सौवीर शूर सौराष्ट्र मगध मालव केरल ||
बाल्मीक सिंधु पांचाल चोल कुरु कामरूप ।
गंधर्व किरात विदेह अंग कर्णाट् भूप ।।

अलंकृत शैली-

इस शैली के अन्तर्गत कवि अलंकारों का उपयोग छोटे या बड़े वाक्यों में करता हैं वर्ण्य विषय / कथ्य के साथ एक दूसरा कथ्य उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, भी व्यंजित होता रहता है । उपमा, रूपक, अर्थान्तर- यास इत्यादि अलंकारों के प्रयोग कथन / शैलीगत वैशिष्ट्य सहज ही उत्पन्न हो जाता है। आलोच्य दोनों कवियों ने मानव या मानवेतर वस्तुओं का अलंकृत रूप प्रस्तुत किया है ।

(1) उद्भ्रान्त हृदयश्चापित विवर्ण वदनोऽभवत ।
स धुर्यो वै परिस्पन्दन युग चक्रान्तर यथा ।।
नाशकृत पाश मुन्मोक्तुं बलिरिन्द्र कृत यथा ।।
{२} रात्रिः शाशंकोदित सौम्य वस्त्रा
तारागणोन्मीलित चारु नेत्रा ।
ज्योत्स्नांशुक प्रावारणा विभाति ।
नारीव शुक्लांशुक संवृतांगी ।।
प्रकीर्ण हंसा कुल मेखलाना

IJRSSH

प्रबुद्ध पद्मोत्पल मालिनीम् ।
वाप्युत्त मानामधिकाद्य लक्ष्मी
र्वरांगनानामिव भूषितानाम् ।।
(३) निर्मल उर मंदिर में जलता है भक्ति-दीप |
बिखराते हैं जल मुक्ता पावन नयन - सीप ।।
मानस विवेक स्थिर रहना हरि अनुकम्पा से ।
हिल जाता है विश्वास चतुरता - शंका से ।।
(४) उनके सूर्योदय से नृप तारक सभी मलिन
अब तक श्री संशय निशा किन्तु अब स्वर्णिम दिन ।।
शोभा की दीप शिखा ही तो वैदेही तन ।
मणिकांत किरण-सा जगमग जग उज्ज्वल शरीर ।

व्यंगात्मक शैली-

जिस शैली में वाच्यार्थ प्रधान न होकर उससे प्रतीयमान व्यंग्य को ध्वनि करें, उसे व्यंग्यात्मक शैली कहते हैं । इस शैली में शब्दों का प्रभाव तीखे रूप का ऐसा संगुफन होता है कि वक्ता के कथन में श्रोता पर पड़ता है-

(1) वसेतू सह सुपलेन कुद्धे नाशी विषेण
च न तु मित्र प्रवादेन संवसेच्छत्रु से बिना ।।
जानामि शीलं ज्ञातीनां सर्व लोकेषु राक्षस ।
हृष्यन्ति व्यसनेववेते ज्ञातीनं ज्ञातयः सदा ।।
(२) स्त्रीषु शूर बिनाधासु परदाराभिमर्शनम् ।
कृत्वा का पुरुषं कर्म शूरो ऽहमिति मन्यसे ।।

हो रहे आपके मुख में क्रोध शब्द शोभित ।
झरती हैं वेद ऋचायें तपसी मानस से
हो रहा पवित्र विवेक सचित्र क्रोध से,
आपकी बचन वीरता इस समय दर्शनीय ।।

IJRSSH

प्रश्नात्मक शैली-

जिज्ञासा मनुष्य की आदिम वृत्ति है । प्रकृति से लेकर मानव चरित्र/क्रिया-कलापों का देखकर उसकी प्रश्नाकुल बढ़ जाती है। इसी रहस्य को जानने के लिए वह गुरू / आप्तजन / विद्वान /ऋषियों से प्रश्न कर अपनी शंका का समाधान करता था। आवश्यकता या अवसर आने पर वह कर्ता व्यक्ति से ही प्रश्न करने लगा। इसी प्रवृत्ति से इस शैली का विकास हुआ हैं । राम कथा के मूल में प्रश्नाकुलता ही हैं।चारित्रयेण च को युक्त? का उत्तर ही रामायण हैं । जिसमें सर्वत्र पात्रों द्वारा प्रश्न पूछे गये हैं-

(१) इदमाश्रम संकाशं किं न्विदं सुनिवर्जितम् ।
श्रोतमिच्छामि भगवन् कस्याय पूर्व आश्रमः ।।
कथं पद्भ्यामिह प्राषै किमर्थ कस्य वामुने ।
वरायुधधरौ वीरौ कस्य पुत्रौ महामुने ।
काक पक्ष धरौ वीरौ श्रीतमिच्छामि तत्तव ।।

इसी प्रकार अरुण रामायण में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है -

पर हिंसा ही क्या मानवता का है निदान?
यदि एक देश भारत हैं तो यह रण कैसा?
इस धनुष यज्ञ के बाद जलद गर्जन कैसा?
ऐसा विवाह उत्सव भूतल पर हुआ कहाँ ?"

वाल्मीकि रामायण एवं अरुण रामायण में रीतितत्त्व-

रीड्. स्रवणेधातु से बने रीति शब्द धारा तथा रीड्. गलौ से व्युत्पन्न रीतिशब्द मार्ग एवं गमन के अर्थ गमन के अर्थ प्रयुक्त होता है । प्राक्तन अर्थ की दृष्टि से रीति शब्द मुख्यतः धारा, मार्ग: गमन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है । काव्य-शास्त्रीय ग्रंथों की अवधारणा विकसित होने पर यह शब्द काव्य की आत्मा रूप में स्वीकृत हुआ, तभी इसका प्रयोग विशिष्ट पद संघटना के रूप में व्यवहृत हुआ ।

इस प्रकार इस शब्द के विभिन्न अर्थ मौलिक अंतर के कारण नहीं अपितु स्वाभाविक विकास के परिणाम हैं। दण्डी ने काव्य दो मार्ग-वैदर्भी और गोड़ीय बताये हैं। उनका कथन व्यक्ति या वर्ग विशेष की अभिव्यक्ति प्रणाली की ओर संकेत करता है । यह काव्य मार्ग का ही पर्याय है । वामन, भोज, कुन्तक जैसे आचार्यों ने इसे काव्य - शैली रूप में प्रतिष्ठित किया है तथा इसके भेद पांचाली, वैदर्भी, गौड़ी रीति का उल्लेख किया गया है । इन्हें क्रमशः कोमला वृत्ति, उपनागरिका वृत्ति एवं परुषावृत्ति से जोड़कर रस / शब्दों के सन्दर्भ में व्याख्यायित किया गया है ।

(1) पांचाली रीति (कोमला वृत्ति) यह कहने में अतिश्योक्ति न होगी कि प्रसाद गुण के लिए अपेक्षित वर्णों से व्यंजित कोमला वृत्ति / पंचाली रीति के द्योतक हैं। अपने सारत्य बोध के कारण यह रीति सभी गुणों के वर्णों को आत्मसात् कर लेती हैं ।

IJRSSH

(१) हंसो यथा राजत पंजरस्थः
सिंहो यथा मंदर कंदरस्थः ।
वीरो यथा गर्वित कुंजरस्थ
श्चन्द्रोऽपि वनाज तथाम्बरस्थः ।
(२)नील नागाभया वेण्या जघनं गतयैकया।
नीलया नीरवापाये वन राज्यामहीमिव ।।
सीतां पदम पलाशाक्षीं मन्मथस्य रतिं यथा ।
इष्टां सर्वस्य जगतः पूर्णचन्द्र प्रभामिव ।।

एक ही सृष्टि में राम और रावण का रण ।
जैसा जिसका मन वैसा कर्म और चिन्तन ||
अत्यन्त कठिन है अमृत और विष का मंथन ।
उद्घाटित करता सत्य पारदर्शी लोचन ।।
हो गए शब्द असर्थ भावमय गरिमा से |
दोनों के दोनों दीपित अपनी महिमा से ।
बाहर की मुद्रा पर भीतर का ही प्रभाव ।
क्यों हो प्रसन्नता से प्रसन्नता का दुराव । । *

(2) उपनागरिका वृत्ति (वैदर्भी रीति) माधुर्य गुण व्यंजक वर्णों से संघटित होने के कारण इसके अन्तर्गत ये सभी तत्व उपलब्ध हो जाते हैं। जो माधुर्य गुण के लिए अपेक्षित होते हैं । सारांश में यह कहा जा सकता है, कि जो गुण परुषावृत्ति के लिए आवश्यक होते हैं, वैदर्भी रीति के लिए निषिद्ध माने गए हैं । वैदर्भी रीति से श्रृंगार, करुण एवं शान्त रसों की विशिष्ट व्यंजना होती है।

(क) (१) चंद्रांशु किरणाभाश्च द्वारा कासांचिदुदताः ।
हँसा इव बभुः सुप्ताः स्तन मध्येसु योषिताम् ।।
अपरासां च वैदूर्यः कादम्बा इव पक्षिणः ।
हम सूत्राणि चान्यासां चक्रवाका इवाभवन ।।
(ख) (१) बज उठती किंकितियां पैजनियाँ मधुर-मधुर
संतानों से ही हो गया स्वर्ग ही अंतःपुर |
देखो कैसे वे दुमुक ठुमक कर चलते हैं ।
उठते हैं गिरते हैं सानन्द उछलते हैं । *

IJRSSH

रोती आँखे केन्द्रित कौसल्या के मुख पर ।
फिर अश्रु बिन्दु बेटे की नील कपोलों पर ।
बिखरे मोती को देख मर्म कण गए बिखर।।
भीगी पलकों पर जीवन सुधि जाती घिर-घिर ।
मृत पितृ देह पर दोनों पुत्रों का नत शिर ।।'

(3) परुषावृत्ति (गौड़ी रीति)- सामान्यतः ओज गुण प्रकाशक वर्णों से युक्त होने के कारण इसके अन्तर्गव वे सभी विशेषताएँ समाहित मिलती हैं, जिनका उल्लेख ओज गुण में पीछे किया जा चुका है। दीर्घ समास युक्त, क्लिष्ट शब्द संघटन से गौड़ी रीति का उद्दीप्त लक्ष्मण संवाद, कैकेयी कौशल देखते ही बनता है । परशुराम वरयाचना, अयोध्या की भयावह निर्जनता खर-दूषण, कुंभकर्ण युद्ध के प्रसंगों में इस रीति के उदाहरण दृष्टव्य हैं -

(१) ते सामापततां शब्दः क्रुद्धानामपि गर्जताम् ।
उद्वर्त इव सप्तानां समुद्राणामभूत स्वनः।
तेषां रामः शरै षडुभिः षड्जघान निशाचरान् ।
निमेषान्तर मात्रेण शरैरग्नि शिखोपमैः।।
राक्षसानां च निनदैमेरीणां चैव निःस्वनैः ।
सा वभूव निशा धोरा भूयो घोरतराभवत् ।
गोलागूला महाकाया स्तमसा तुल्य वर्चसः
संपरिष्वज्य वाहुभ्यां भक्ष्ययन् रजनीचरान्।।
आकाशाद् विद्यनात् तीव्रा उल्काश्चाभ्य पतंस्तदा ।
वमन्त पावका ज्वाला: शिवा घोरा ववाशिरे ।।
व्याहरन्त मृगा घोरा रक्षसां निधनं तदा ।
समापतन्तो योधास्तु प्रास्खलंस्तत्र दारुणम् ।।
रथनेमिस्वनस्तत्र धनुषश्चापि घोरवत्
शांखभेरी मृदगांता वभूव तुमुलः स्वनः ।।'

चलता ही रहा असुर वानर का रण,
विस्फोट चोट सं घोष खड्ग का खट-खुट खन ।
सन सनन तड़तड़ाहट चट चिट चट झन झिन इन ।
फन फन फन मन मन मनन झनन झा झिक स्वन ।।

IJRSSH

चिग्धार उठा हाथी समूह सा अंधकार ।
चीलों-सी चिल्लाहट स्यारों-सा नव हुआर |
मरघट के सनके स्वानों सा भुक्खड़ भुकार
भूतों-सी हँसी पिशाचों सा नव अट्टहास ।।

पद-संघटन सौन्दर्य- आलोच्य दोनों में पद संरचना सरल है। रीति वृत्ति के लक्षण और उदाहरण देते समय यह देखा गया है कि आलोच्य दोनों काव्यों में अर्थ के घटक पदों में निकटता एवं सुसंबद्धता बनी हुई है । यहाँ शब्द क्रम के कारण उत्पन्न सौन्दर्य के कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं, जिनसे चमत्कार - सृष्टि में सहायता मिली है। एक श्लोक में अनेक क्रियाओं का संगुफन कैसा चमत्कारिक हैं, दृष्टव्य है-

वहन्ति वर्षन्ति नन्दति मान्ति, ध्यायनि नृत्यन्ति समाश्वसन्ति ।
नद्यो घना मन्त गजा वनान्ताः, प्रिया विहीनाः शिखिवनः प्लवंगमाः ।

इसी प्रकार अभ्युपैति एवं जाता शब्द आवृत्ति जन्य सौन्दर्य देखिए-

निद्रा शनैः केशवमभ्युपैति द्रुतंनदी सागरमभ्युपैति ।
हृष्टा बलाका घनमभ्युपैति, कान्ता सकामा प्रियमभ्युपैति ।
जातावनांता शिखि सुप्रनृत्ताः, जाताः कदम्बा सकदम्ब शाखा।
जाता वृषा गोषु समान कामाः जाता महीं सस्य बनाभि रामा।।३

रामादिक बालकों की क्रीड़ाओं में क्रियागत सौन्दर्य चमत्कारिक बन पड़ा है-

देखो, वे कैसे ठुमुक ठुमुक कर चलते हैं
उठते हैं, गिरते हैं, सानन्द उछलते हैं
बज उठती किंकिणियों-पैजनियाँ मधुर मधुर ।

एक ही क्रियागत द्विरुक्ति से भाव - सौन्दर्य की वृद्धि दर्शनीय है -

लगता कि पुष्प लक्ष्मी का अधिवास यहाँ
लगता कि शारदा की शुभ्राभा व्याप्त यहाँ
लगता कि सुगन्धित शिव पार्वती प्रकाश यहाँ
लगता कि हो गया हमें बहुत कुछ प्राप्त यहाँ ।
मैं खिन्न खिन्न मैं खिन्न खिन्न, मैं खिन्न-खिन्न ।
लपटें नव-नव लपटें नव-नव, लपटें नव-नव ।

IJRSSH

सन्दर्भ

1. वा०रा० ५१६१६-१८
2. वा०रा० २/१२४-
3. अरुण, पृ०-१४७
4. वा०रा० २/४०/४६, ५१
5. अरुण, पृ०- १५८
6. अरुण, पृ०-१६८
7. अरुण, पृ०-२२०
8. अरुण, बृ०-२४३
9. अरुण, पृ०-२५०
10. बा०रा० ६४६५, ६, १२, १७
11. वा०रा० ६/१०१/६,७
12. अरुण, पृ०-२३८-३६
13. अरुण, पृ०-५५२
14. वा०रा० ६/१०६/१
15. वा०रा० ६/१११६०
16. वा०रा० ६१११/८५
17. अरुण, पृ०- ६७६८-७६
18. अरुण, पृ० ४६
19. अरुण, पृ०- ५६३
20. वही, पृ० ४५३
21. साब्द० ८ / 99
22. काव्यालंकार सूत्र ३/१११
23. ध्वन्यालोक २ उद्योत
24. नाट्यशास्त्र १७६५
25. साहित्य दर्पण, ८/४-७
26. वा०रा० ३/२५/४३-४५
27. वा०रा०५/१/५६-६३
28. अरुण रामायण- ५०-७८
29. अरुण रामायण-पृ०-५२०
30. काव्यादर्श - १/५१

IJRSSH

31. काव्य प्रकाश - ८६८
32. सा० द० ८२३
33. चा० रा० २/४७/१८-१€

REFERENCES

1. V.R. 51616-18
2. V.R. 2/124-
3. Arun, page 147
4. V.A.R. 2/40/46, 51
5. Arun, page 158
6. Arun, page 168
7. Arun, page 220
8. Arun, Br-243
9. Arun, page 250
10. B.R. 6465, 6, 12, 17
11. V.R. 6/101/6,7
12. Arun, page-238-36
13. Arun, page 552
14. V.R. 6/106/1
15. VR 6/11160
16. VR 6111/85
17. Arun, page 6768-76
18. Arun, p.46
19. Arun, page 563
20. Ibid, p.453
21. V.R. 8 / 99
22. Kavyalankar Sutra 3/111
23. Dhvanyalok 2 Enterprise
24. Dramaturgy 1765
25. Literary Mirror, 8/4-7
26. VR 3/25/43-45
27. VA05/1/56-63
28. Arun Ramayana - 50-78
29. Arun Ramayana-Page-520
30. Kavyadarsh - 1/51
31. Kavya Prakash - 868
32. Sa.D.823
33. Cha Ra 2/47/18-1€

IJRSSH